ISSN: 2584-0231(Online)
International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology
© IJMRAST | Vol. 3 | Issue 4 | April 2025
Available online at: https://ijmrast.com
DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i4.135

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन

सत्य प्रकाश चौधरी[1], डॉ. ओम प्रकाश यादव[2]
[1]शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा
[2]सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा
Email: satyanet.med@gmail.com

सारांश

मानव जीवन और पर्यावरण का आपसी संबंध प्राचीन काल से रहा है। आज जब विश्व पर्यावरणीय संकट का सामना कर रहा है, तब शिक्षा के क्षेत्र में पर्यावरणीय जागरूकता का विकास अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना की स्थिति का विश्लेषण करना है। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थी पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति संवेदनशील हैं, परंतु व्यवहारिक स्तर पर उनका योगदान अपेक्षाकृत कम है। शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि यदि विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा को व्यवहारिक, प्रायोगिक और गतिविधि-आधारित बनाया जाए तो विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति ठोस दृष्टिकोण विकसित हो सकता है।

मुख्य शब्द: पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरणीय चेतना, जागरूकता, सतत विकास

भूमिका

मानव सभ्यता का विकास प्रकृति और पर्यावरण के सहारे ही संभव हुआ है। मानव ने अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सदैव प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता रखी है। जल, वायु, मृदा, वनस्पति, पशु-पक्षी आदि सभी प्राकृतिक तत्व मिलकर एक ऐसा संतुलित तंत्र बनाते हैं जिसे हम "पर्यावरण" कहते हैं। यह पर्यावरण न केवल मानव के जीवन को पोषित करता है, बल्कि समग्र जैव-मंडल (Biosphere) की स्थिरता बनाए रखने में भी सहायक है। किंतु आधुनिक युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तीव्र प्रगति, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण तथा जनसंख्या वृद्धि के कारण पर्यावरणीय संतुलन गंभीर संकट में पड़ गया है। वनों की अंधाधुंध कटाई, प्रदूषण की बढ़ती समस्या, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं ने सम्पूर्ण मानव जाति को चिंतन के लिए बाध्य कर दिया है।

आज हम जिस स्थिति का सामना कर रहे हैं, वह केवल वैज्ञानिक या भौतिक संकट नहीं है, बल्कि यह एक नैतिक और शैक्षिक संकट भी है। क्योंकि समस्या का मूल कारण मनुष्य का स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण और पर्यावरण के प्रति उसकी असंवेदनशीलता है। जब तक व्यक्ति और समाज में पर्यावरण के प्रति चेतना और जिम्मेदारी का भाव विकसित नहीं होगा, तब तक पर्यावरणीय संकट का समाधान संभव नहीं है। इसी कारण आज शिक्षा को पर्यावरणीय संरक्षण का मुख्य साधन माना जा रहा है। शिक्षा के माध्यम से ही आने वाली पीढ़ी को यह समझाया जा सकता है कि पर्यावरण का संरक्षण करना केवल एक विकल्प नहीं बल्कि जीवन की अनिवार्यता है।

पर्यावरणीय संकट के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से वैज्ञानिकों और चिंतकों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए आवाज उठाना शुरू किया। 1972 में स्टॉकहोम सम्मेलन, 1992 में रियो डी जेनेरियो में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन (Earth Summit), 2015 का पेरिस जलवायु समझौता आदि ऐसे वैश्विक प्रयास हैं जिन्होंने विश्व को यह चेतावनी दी कि यदि हमने प्रकृति का संरक्षण नहीं किया तो भविष्य में मानव अस्तित्व ही संकटग्रस्त हो जाएगा। भारत में भी संविधान के अनुच्छेद

48(क) और 51(क) के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण को राज्य और नागरिकों का कर्तव्य बताया गया है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में 'पर्यावरण शिक्षा' को अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित करने का उद्देश्य भी यही है कि विद्यार्थी छोटी आयु से ही प्रकृति और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनें।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा वह अवस्था है जिसमें विद्यार्थी किशोरावस्था की ओर अग्रसर होते हैं। यह वह समय है जब उनमें मूल्य, दृष्टिकोण और आदतें स्थायी रूप से विकसित होने लगती हैं। यदि इस अवस्था में उन्हें पर्यावरण के महत्व का ज्ञान कराया जाए और व्यवहारिक गतिविधियों के माध्यम से संरक्षण की आदतें विकसित की जाएँ, तो वे आजीवन प्रकृति के प्रति संवेदनशील नागरिक बन सकते हैं। उदाहरणार्थ – यदि विद्यार्थी विद्यालय में 'स्वच्छता अभियान', 'वृक्षारोपण कार्यक्रम' और 'प्लास्टिक मुक्त परिसर' जैसी गतिविधियों में भाग लेते हैं, तो वे न केवल इन आदतों को अपनाते हैं बल्कि समाज में भी इसके संदेशवाहक बनते हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के बीच पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूकता तो देखने को मिलती है, किंतु व्यवहारिक स्तर पर उसका प्रभाव उतना सशक्त नहीं है। वे प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी के बारे में पढ़ते हैं, परंतु अपने दैनिक जीवन में जल की बर्बादी रोकना, बिजली की बचत करना या प्लास्टिक का कम उपयोग करना जैसी क्रियाओं को नियमित रूप से अपनाने में वे पीछे रह जाते हैं। यह स्थिति शिक्षा प्रणाली के लिए एक चुनौती है कि किस प्रकार विद्यार्थियों में केवल ज्ञान नहीं बल्कि व्यावहारिक दृष्टिकोण और क्रियात्मक सहभागिता भी विकसित की जाए।

पर्यावरणीय जागरूकता का आशय केवल पर्यावरणीय समस्याओं की जानकारी भर से नहीं है, बल्कि यह एक समग्र दृष्टिकोण है जिसमें व्यक्ति का दृष्टि-बोध, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी सम्मिलित होती है। एक पर्यावरण-सचेत व्यक्ति न केवल प्रकृति की रक्षा करता है बल्कि दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करता है। यही कारण है कि शोधकर्ताओं और शिक्षाविदों का मानना है कि शिक्षा के सभी स्तरों पर विशेषकर माध्यमिक स्तर पर पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन और विकास अत्यंत आवश्यक है। भारत जैसे विकासशील देश में पर्यावरणीय जागरूकता का महत्व और भी अधिक है। एक ओर जहाँ यहाँ तेजी से औद्योगीकरण और शहरीकरण हो रहा है, वहीं दूसरी ओर गाँवों और ग्रामीण क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों पर प्रत्यक्ष निर्भरता भी बनी हुई है। ग्रामीण विद्यार्थी प्रत्यक्ष रूप से जल, मिट्टी, पशु-पक्षियों और कृषि पर निर्भर रहते हैं, इसलिए उनका दृष्टिकोण शहरी विद्यार्थियों की तुलना में अलग हो सकता है। इस संदर्भ में शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है।

इसके अतिरिक्त, आज शिक्षा को केवल सूचना का माध्यम मानकर नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह मूल्य निर्माण, दृष्टिकोण परिवर्तन और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करने का साधन है। जब विद्यार्थी यह अनुभव करेंगे कि उनका जीवन प्रकृति और पर्यावरण से गहराई से जुड़ा हुआ है, तभी वे संसाधनों का संरक्षण करेंगे। इसलिए पर्यावरण शिक्षा केवल कक्षा-कक्ष तक सीमित न रहकर जीवन पद्धति का हिस्सा बननी चाहिए।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पर्यावरणीय जागरूकता आज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामाजिक आवश्यकता है। इसके बिना न तो सतत विकास (Sustainable Development) संभव है और न ही जीवन की गुणवत्ता (Quality of Life) को बनाए रखा जा सकता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय चेतना का अध्ययन करना है ताकि उनकी जागरूकता की वास्तविक स्थिति का आकलन किया जा सके और भविष्य की नीतियों एवं शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान किए जा सकें।

शोध का प्रकार

इस शोध में प्रयुक्त पद्धति **सर्वेक्षण पद्धति (Survey Method)** है। सामाजिक विज्ञान तथा शिक्षा संबंधी अनुसंधानों में सर्वेक्षण पद्धति का अत्यधिक उपयोग किया जाता है क्योंकि यह पद्धति शोधकर्ता को बड़ी संख्या में व्यक्तियों के विचारों, दृष्टिकोणों, आदतों तथा व्यवहार के बारे में तथ्यात्मक जानकारी एकत्र करने की सुविधा प्रदान करती है।

सर्वेक्षण पद्धति के अंतर्गत उपयोग किए गए उपकरण (Tools):

प्रश्नावली (Questionnaire): विद्यार्थियों के लिए पर्यावरणीय ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार पर आधारित प्रश्न।

साक्षात्कार (Interview): चुनिंदा विद्यार्थियों से गहन जानकारी प्राप्त करने हेतु।

अवलोकन (Observation): विद्यालय में आयोजित पर्यावरणीय गतिविधियों (जैसे- पौधारोपण, स्वच्छता अभियान) में विद्यार्थियों की भागीदारी का अवलोकन।

नमूना (Sample)

इस शोध में नमूना चयन हेतु **नियत नमूना पद्धति (Purposive Sampling Method)** का उपयोग किया गया। कुल **200 विद्यार्थियों** को नमूने के रूप में चुना गया, जिनमें से **100 शहरी क्षेत्र** (नगर के विद्यालयों) और **100 ग्रामीण क्षेत्र** (गाँव के विद्यालयों) के विद्यार्थी सम्मिलित किए गए।

- कक्षा 9 और 10 के विद्यार्थियों को चयनित किया गया क्योंकि इस अवस्था में विद्यार्थी किशोरावस्था की ओर अग्रसर होते हैं तथा उनमें मूल्य और दृष्टिकोण स्थायी रूप से विकसित होने लगते हैं।
- इस आयु वर्ग (14–16 वर्ष) के विद्यार्थी पर्यावरणीय समस्याओं को समझने और उस पर अपने विचार व्यक्त करने में सक्षम होते हैं।
- नमूना चयन में यह ध्यान रखा गया कि विद्यार्थियों में **लिंग (बालक एवं बालिका), क्षेत्र (शहरी एवं ग्रामीण) तथा विद्यालय का प्रकार** (सरकारी एवं निजी) का संतुलन बना रहे।

इस प्रकार का नमूना चयन इस शोध को तुलनात्मक (Comparative) रूप प्रदान करता है और शहरी-ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय चेतना में अंतर स्पष्ट करने में सहायक है।

उपकरण (Tools)

इस शोध में डेटा संकलन के लिए निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया गया:

शोधकर्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली (Questionnaire):

प्रश्नावली दो भागों में विभाजित थी –

(क) *पर्यावरणीय ज्ञान* से संबंधित प्रश्न (जैसे – वायु प्रदूषण के स्रोत, जल संरक्षण के उपाय, जलवायु परिवर्तन का कारण आदि) ।

(ख) *पर्यावरणीय दृष्टिकोण एवं व्यवहार* संबंधी प्रश्न (जैसे – क्या आप घर में बिजली की बचत करते हैं? क्या आप पौधारोपण अभियानों में भाग लेते हैं? क्या आप प्लास्टिक का कम उपयोग करते हैं?)।

प्रश्नावली में वस्तुनिष्ठ (Objective) प्रश्न, द्विकल्पीय (Yes/No) प्रश्न और लाइकेर्ट स्केल (Likert Scale) पर आधारित कथन सम्मिलित किए गए।

साक्षात्कार (Interview):

कुछ विद्यार्थियों से व्यक्तिगत साक्षात्कार लेकर उनकी सोच और दृष्टिकोण को गहराई से समझा गया।

साक्षात्कार से यह पता लगाने का प्रयास किया गया कि विद्यार्थी पर्यावरणीय समस्याओं को अपने जीवन से कैसे जोड़ते हैं और उनके समाधान में कैसे योगदान देना चाहते हैं।

विश्लेषण की विधि (Method of Analysis)

संगृहीत आंकड़ों का विश्लेषण **वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics)** की विधि से किया गया।

प्रतिशत (Percentage): प्रत्येक प्रश्न के उत्तरों का प्रतिशत निकालकर विद्यार्थियों की जागरूकता का स्तर स्पष्ट किया गया।

माध्य (Mean): पर्यावरणीय दृष्टिकोण एवं व्यवहार संबंधी बिंदुओं के औसत अंक लेकर उनकी प्रवृत्ति का आकलन किया गया।

तुलना (Comparison): शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों, बालक एवं बालिका विद्यार्थियों के उत्तरों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

इस प्रकार प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गए और उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत किए गए।

आंकड़ो का विश्लेषण (Data Analysis)

शोध में संकलित आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत और माध्य (Mean) के आधार पर किया गया। प्रत्येक प्रश्न का परिणाम तालिका और वर्णनात्मक शैली में प्रस्तुत है।

पर्यावरणीय समस्याओं की पहचान

समस्या	शहरी विद्यार्थी (N=100)	ग्रामीण विद्यार्थी (N=100)	कुल (N=200)
वायु प्रदूषण को गंभीर मानने वाले	82	70	76%
जल प्रदूषण को गंभीर मानने वाले	80	68	74%
वनों की कटाई को समस्या मानने वाले	72	60	66%
जलवायु परिवर्तन का उल्लेख करने वाले	65	50	57.5%

विश्लेषण: शहरी विद्यार्थियों में पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूकता का स्तर अधिक पाया गया। विशेषकर वायु और जल प्रदूषण को दोनों समूहों ने सबसे गंभीर माना।

व्यवहारिक स्तर पर पर्यावरणीय आदतें

आदत/व्यवहार	शहरी विद्यार्थी (%)	ग्रामीण विद्यार्थी (%)	कुल (%)
बिजली की बचत करने वाले	78	65	71.5%
जल संरक्षण करने वाले	70	60	65%
पौधारोपण अभियान में भाग लेने वाले	55	42	48.5%
प्लास्टिक का उपयोग कम करने वाले	60	48	54%

विश्लेषण: यद्यपि विद्यार्थी बिजली और जल संरक्षण में अपेक्षाकृत अधिक जागरूक पाए गए, किंतु पौधारोपण और प्लास्टिक उपयोग को कम करने जैसे व्यवहारों में उनकी सक्रियता सीमित रही।

लिंग आधारित तुलना (Gender-wise Comparison)

पहलू	बालक विद्यार्थी (%)	बालिका विद्यार्थी (%)
जल संरक्षण की आदत	62%	74%
विद्यालयी पर्यावरणीय गतिविधियों में भागीदारी	58%	69%
स्वच्छता पर ध्यान	55%	72%

विश्लेषण: बालिकाएँ पर्यावरणीय आदतों और व्यवहार के प्रति अधिक संवेदनशील पाई गईं। स्वच्छता और जल संरक्षण में उनका दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक रहा।

औसत अंक (Likert Scale आधारित)

विद्यार्थियों के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को पाँच बिंदुओं वाले लाइकेर्ट स्केल पर मापा गया (1 = पूर्णतः असहमत, 5 = पूर्णतः सहमत)।

कथन (Statement)	शहरी विद्यार्थी (Mean)	ग्रामीण विद्यार्थी (Mean)	कुल (Mean)
"प्रकृति का संरक्षण करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है।"	4.6	4.3	4.45
"प्लास्टिक का उपयोग तुरंत बंद होना चाहिए।"	4.2	3.8	4.0
"मैं भविष्य में पर्यावरणीय अभियानों में भाग लूँगा/लूँगी।"	4.0	3.6	3.8

विश्लेषण: दोनों ही समूहों ने पर्यावरणीय संरक्षण को महत्वपूर्ण माना, परंतु शहरी विद्यार्थियों का औसत अंक थोड़ा अधिक रहा।

निष्कर्ष

अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर संतोषजनक अवश्य है, किंतु यह केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित है। अधिकांश विद्यार्थियों ने प्रश्नावली के उत्तरों में प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन तथा प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग जैसी समस्याओं को मानव जीवन के लिए गंभीर खतरा माना। विशेष रूप से वायु और जल प्रदूषण को विद्यार्थियों ने सबसे अधिक चिंताजनक समस्या के रूप में पहचाना। इससे यह निष्कर्ष निकला कि विद्यार्थियों में पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जानकारी का स्तर पर्याप्त है।

हालाँकि जब व्यवहारिक स्तर पर उनकी आदतों और क्रियाओं का आकलन किया गया तो स्थिति भिन्न दिखाई दी। विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया कि वे अक्सर बिजली और जल का अपव्यय करते हैं, प्लास्टिक की थैलियों का उपयोग पूरी तरह बंद नहीं कर पाते और वृक्षारोपण जैसी गतिविधियों में उनकी भागीदारी सीमित रहती है। इससे यह निष्कर्ष सामने आया कि ज्ञान और व्यवहार के बीच एक अंतर (Gap) विद्यमान है। वे समस्याओं को पहचानते तो हैं, परंतु उनके समाधान में सक्रिय रूप से सहयोग करने की प्रवृत्ति कम है।

शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना करने पर यह पाया गया कि शहरी विद्यार्थियों में पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूकता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है। शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में 'स्वच्छता अभियान', 'ग्रीन क्लब', 'वृक्षारोपण कार्यक्रम' तथा 'विज्ञान प्रदर्शनी' जैसी गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यावहारिक अवसर अधिक मिलते हैं। वहीं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी प्रत्यक्ष रूप से प्रकृति और पर्यावरण से जुड़े होने के बावजूद इन समस्याओं को 'सामान्य जीवन की कठिनाई' के रूप में देखते हैं और उन्हें हल करने के प्रति गंभीरता अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है। यह इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर केवल प्राकृतिक निकटता पर नहीं बल्कि शैक्षिक अवसरों और सामाजिक परिवेश पर भी निर्भर करता है।

लिंग के आधार पर भी विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में अंतर दिखाई दिया। बालिकाएँ पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील और चिंतनशील पाई गईं। उन्होंने साक्षात्कार में जल संरक्षण, वृक्षारोपण और घर की स्वच्छता बनाए रखने के महत्व को अधिक रेखांकित किया। बालक विद्यार्थियों में पर्यावरणीय गतिविधियों में भाग लेने की इच्छा तो अधिक थी, किंतु नियमित अभ्यास और व्यवहार में उन्हें अपनाने की प्रवृत्ति बालिकाओं की तुलना में कम रही। यह दर्शाता है कि पर्यावरणीय चेतना का स्तर लिंगानुसार भी भिन्न हो सकता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह रहा कि जिन विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा कक्षा-कक्ष के बाहर भी पर्यावरणीय गतिविधियाँ कराई जाती हैं, वहाँ विद्यार्थियों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक और सक्रिय रहा। उदाहरणस्वरूप जिन विद्यालयों में 'प्लास्टिक-मुक्त परिसर', 'जल संरक्षण अभियान' और 'स्वच्छता सप्ताह' जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जाती थीं, वहाँ के विद्यार्थी इन समस्याओं को केवल सैद्धांतिक स्तर पर न देखकर व्यवहारिक स्तर पर भी अपनाने के लिए प्रेरित पाए गए। इससे यह सिद्ध होता है कि विद्यालयी वातावरण और सह-पाठ्य गतिविधियाँ विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना विकसित करने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं।

अंततः यह भी निष्कर्ष निकला कि यद्यपि विद्यार्थियों में पर्यावरणीय ज्ञान पर्याप्त है, परंतु व्यवहारिक और स्थायी दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है। यदि विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक और समाज मिलकर विद्यार्थियों को केवल पढ़ाई तक सीमित न रखकर जीवन की गतिविधियों में पर्यावरणीय अभ्यासों से जोड़ें, तो वे भविष्य में अधिक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक सिद्ध हो सकते हैं।

वर्तमान शोध के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर ज्ञान की दृष्टि से संतोषजनक है, किंतु यह जागरूकता अधिकतर सैद्धांतिक दायरे में ही सीमित है। विद्यार्थी प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन तथा संसाधनों के अंधाधुंध दोहन जैसी समस्याओं को गंभीर मानते हैं और उनके नकारात्मक प्रभावों से अवगत भी हैं। परंतु जब इन्हीं समस्याओं के समाधान के संदर्भ में उनके व्यवहार और जीवन शैली का विश्लेषण किया गया, तो पाया गया कि ज्ञान और व्यवहार के बीच एक स्पष्ट अंतर मौजूद है। अधिकांश विद्यार्थी पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में जानते तो हैं, परंतु उनका अनुपालन अपने दैनिक जीवन में नियमित रूप से नहीं कर पाते।

शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना से यह निष्कर्ष सामने आया कि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूकता और सक्रियता का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है। इसका कारण शहरी विद्यालयों में पर्यावरणीय गतिविधियों और सह-पाठ्य कार्यक्रमों का अधिक होना है। वहीं ग्रामीण विद्यार्थी प्राकृतिक परिवेश से निकटता के बावजूद इन समस्याओं को सामान्य

जीवन की कठिनाई मानकर चलते हैं और उन्हें सुलझाने के प्रति उतनी गंभीरता नहीं दिखाते। इससे यह स्पष्ट हुआ कि पर्यावरणीय चेतना केवल प्राकृतिक सान्निध्य पर निर्भर नहीं करती, बल्कि विद्यालयी वातावरण, शिक्षण पद्धति और सामाजिक परिस्थितियों पर भी आधारित होती है।

लिंग के आधार पर किए गए अध्ययन से यह परिणाम सामने आया कि बालिकाएँ पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने वाली होती हैं। वे जल, ऊर्जा और स्वच्छता के संरक्षण में अधिक सचेत रहती हैं। जबकि बालक विद्यार्थी पर्यावरणीय गतिविधियों में भाग लेने की इच्छा तो रखते हैं, किंतु उन्हें आदतों और दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने में अपेक्षाकृत पीछे पाए गए। इससे यह संकेत मिलता है कि पर्यावरणीय शिक्षा में लिंग-आधारित दृष्टिकोण को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

विद्यालयी गतिविधियों और शिक्षण पद्धति का प्रभाव भी निष्कर्षों में स्पष्ट रूप से सामने आया। जिन विद्यालयों में शिक्षक केवल सैद्धांतिक शिक्षा तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों को व्यावहारिक गतिविधियों से जोड़ते हैं, वहाँ विद्यार्थियों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक पाया गया। पौधारोपण अभियान, स्वच्छता अभियान, प्लास्टिक-मुक्त परिसर और जल संरक्षण कार्यक्रम जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के ज्ञान को व्यवहार में बदलने में प्रभावी सिद्ध हुईं। इससे यह स्पष्ट हुआ कि केवल पुस्तकीय ज्ञान से पर्यावरणीय चेतना विकसित नहीं होती, बल्कि इसके लिए व्यावहारिक और सहभागितापूर्ण शिक्षा आवश्यक है।

समग्र रूप से इस अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि यदि शिक्षा प्रणाली माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता को केवल ज्ञान के स्तर तक सीमित न रखकर व्यवहार और जीवन शैली का हिस्सा बनाने में सफल हो, तो आने वाली पीढ़ी एक जिम्मेदार, संवेदनशील और पर्यावरण-सचेत समाज का निर्माण कर सकती है। इसके लिए शिक्षा, शिक्षक, अभिभावक और समाज सभी की संयुक्त भूमिका आवश्यक है। केवल सामूहिक प्रयासों से ही पर्यावरणीय संकटों से निपटा जा सकता है और सतत विकास (Sustainable Development) की दिशा में ठोस कदम बढ़ाए जा सकते हैं।

संदर्भ (References)

[1]. आचार्य, के. एन. (2019). *पर्यावरण शिक्षा और सतत विकास*. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।

[2]. गुप्ता, आर. एवं शर्मा, एस. (2020). *पर्यावरण अध्ययन*. जयपुर: आर्या पब्लिकेशन।

[3]. भारत सरकार (2006). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF-2005)*. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT)।

[4]. भारत सरकार (2009). *पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 एवं संशोधन*. नई दिल्ली: विधि एवं न्याय मंत्रालय।

[5]. भारतीय संविधान. अनुच्छेद 48(क) एवं 51(क). भारत का संविधान (प्रासंगिक प्रावधान)।

[6]. Mishra, S. P. (2018). *Environmental Education in Indian Schools*. New Delhi: APH Publishing.

[7]. Sharma, M. & Singh, A. (2017). "A Study on Environmental Awareness among Secondary School Students." *Journal of Education and Practice*, 8(12), 45-52.

[8]. UNESCO (1977). *Intergovernmental Conference on Environmental Education*. Tbilisi: UNESCO.

[9]. UNESCO (2014). *Shaping the Future We Want: UN Decade of Education for Sustainable Development (2005-2014) Final Report*. Paris: UNESCO.

[10]. United Nations (2015). *Transforming our world: The 2030 Agenda for Sustainable Development*. New York: United Nations.

[11]. World Commission on Environment and Development (WCED) (1987). *Our Common Future* (Brundtland Report). Oxford: Oxford University Press.

[12]. World Health Organization (2021). *Air pollution and health*. Geneva: WHO Publications.

Cite this Article

सत्य प्रकाश चौधरी, डॉ. ओम प्रकाश यादव, " माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन", *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST), ISSN: 2584-0231, Volume 3, Issue 4, pp. 41-46, April 2025.*

Journal URL: *https://ijmrast.com/*

DOI: *https://doi.org/10.61778/ijmrast.v3i4.135*

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License.